इक देश है इसे बचाना है

कमला भसीन

हमने तो अब ये माना है
बस सच्चा एक तराना है
मन्दिर मस्जिद तो क़ाफी हैं
इक देश है इसे बचाना है

छः दिसम्बर, 1992 को एक मस्जिद पर वार हुआ। यह वार हमारे उच्चतम न्यायालय पर भी हुआ। हमारी पुरानी 'सर्व धर्म समभाव' की परम्परा पर भी चोट हुई।

इस घटना के बाद वही हुआ जो होना था। हमारे देश के सैंकड़ों गांवों और शहरों में दंगे भड़के। पड़ौसी देशों में भी आग फैली। दुनिया भर में भारत की निंदा हुई, हमारा मज़ाक बना। हज़ारों निर्दोष बच्चों, औरतों और मर्दों का खून बहा और उनकी जानें गईं। हज़ारों परिवार बरबाद हुए। लाखों लोगों के घर उजड़े, लाखों के कारोबार खत्म हुए। लाखों ग़रीबों की मज़दूरी मारी गई। नफ़रत, डर, तनाव जगह-जगह छा गया। ग़रीब देश में करोड़ों का नुकसान हुआ।

ज़ुल्म औरतों पर

हमेशा की तरह इस बार भी इन दंगों का असर औरतों पर ज़्यादा हुआ। उनका अपमान हुआ, बलात्कार हुआ। हज़ारों विधवा हो गईं। फिर से तिनके चुन-चुन कर घर बनाने का काम उन पर आ पड़ा। डर और भूख से बिलखते बच्चों, घायल हुए मर्दों को संभालने की ज़िम्मेदारी उन पर आ पड़ी।

ये सब दंगे, हिंसा, लूट-मार, गुंडा-गर्दी हुई धर्म के नाम पर, राम और अल्लाह के नाम पर। पिछले कई सालों से मन्दिर-मस्जिद के नाम पर राजनीति खेली जा रही है। जितने दंगे इन चंद सालों में हुए हैं शायद पहले नहीं हुए होंगे। जब भारत ग़ुलाम था तब भी नहीं, जब निरंकुश राजाओं का राज था तब भी नहीं।

और ये सब तब किया जा रहा है जब देश में विदेशी ताक़तों का आर्थिक कब्ज़ा बढ़ रहा है, जब मंहगाई आसमान छू रही है, जब ग़रीबों की हालत बिगड़ रही है। आज जब ज़रूरत है एकजुट होने की, देश बचाने की, हमारे अपने नेता फूट डालने में लगे हुए हैं। बाहर वालों को क्या दोष दें। शर्म से सिर झुकना चाहिए हर भारतवासी का।

कितना आसान है नफ़रत फैलाना, घर जलाना। एक घर बनाने में लोग टूट जाते हैं। लेकिन लोग मिनटों में घर क्या, पूरी-पूरी बस्तियां जला रहे हैं।

अगर ये मान भी लें कि बाबर ने मन्दिर तोड़ कर मस्जिद बनाई थी। तो क्या अब उसी तरह की बर्बरता दिखाना सही है? क्या ग़लत चीज़ को ख़त्म करने के लिए एक और ग़लत काम किया जाए? क्या मार-काट और तोड़-फोड़ की राजनीति धर्म है? क्या यही सिखाता है हमें धर्म? क्या मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जीवन से हमें यही सीखने को मिलता है। खून से कभी मन्दिर-मस्जिद बनते हैं क्या?

इतिहास में बहुत से हिन्दू और मुसलमान

राजाओं ने जुल्म किए थे। क्या आज हमारे राजनैतिक और धार्मिक नेता उनसे होड़ करने चले हैं? कितने हज़ार सालों के गड़े मुर्दे हम उखाड़ेंगे? इस देश में हज़ारों मन्दिर आदिवासियों के पूजा स्थानों पर बने होंगे, तो क्या अब आदिवासी मन्दिर तोड़ना शुरू कर दें? सैंकड़ों सालों से दलितों पर जुल्म हुए हैं तो क्या दलित हथियार उठा कर पुराने बदले चुकाएं? हज़ारों सालों से औरतों पर अत्याचार हुए हैं। तो क्या अब हर घर में औरतें हिंसा करने लगें, पुराने बदले चुकाने लगें? कहां और कैसे रुकेगा ये सिलसिला? एक बार क़ानून की अवहेलना शुरू हो गई तो "जिसकी लाठी उसकी भैंस" का न्याय चलेगा। फिर न्याय बात-चीत से नहीं, पंचायतों और अदालतों में नहीं, सड़कों पर होगा, छुरियों और तलवारों से, लाठियों और त्रिशूलों से। क्या हम ऐसा समाज चाहते हैं? क्या ऐसी आज़ादी चाहते हैं?

नफ़रत की राजनीति

अगर एक बार नफ़रत की राजनीति चल निकली तो हर फ़िरक़े में झगड़े होंगे, हिन्दु, मुसलमान, सिख, इसाई, जैन, बौद्ध, शिव भक्त, राम भक्त, सीता भक्त, कृष्ण भक्त, साईं बाबा भक्त, संतोषी मां भक्त, सब एक दूसरे से लड़ेंगे। फिर बचेगा कौन? कम से कम भारत तो नहीं बचेगा।

हमने तो आज तक यही सीखा था कि "ईश्वर अल्लाह तेरे नाम"। अगर ऐसा है तो इनके धाम पर क्यों हंगामा है? सत्ता के भूखे लोग आज ईश्वर और अल्लाह को लड़ा रहे हैं, अपनी गंदी राजनीति में भगवान को खींच रहे हैं। हमने यह भी सीखा था "मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर करना"। आज धर्म के नाम पर नफ़रत फैलाई जा रही है।

इस संकट की घड़ी में चुप नहीं रहना है। अगर देश बचाना है तो हिंसा, दंगों, नफ़रत, टूट-फूट के खिलाफ़ आवाज़ उठानी होगी।

धर्म इंसानियत का

हमारी नज़र में इंसानियत सबसे बड़ा धर्म है। अगर इंसान और इंसानियत ही खत्म हो जाएंगे तो न समाज बचेगा, न धर्म। भारत में हमेशा से अलग-अलग धर्मों को मानने वाले लोग रहे हैं।

यहां सब धर्मों की इज्ज़त हुई है। कबीर और रहीम, गौतम और गांधी ने हमें यही सिखाया है। आज हर हिन्दुस्तानी का यह धर्म है कि हम अपनी गंगा-जमुनी सांस्कृतिक विरासत ख़त्म न होने दें। सत्ता के भूखे लोगों को धर्म का इस्तेमाल न करने दें। हमें अहिंसा और प्रेम के ही गीत गाने हैं।

आज सिर्फ़ मर्द ही नहीं, चन्द औरतें भी हिंसा फैलाने, दंगे भड़काने में लगी हैं। हमें हर हिंसा फैलाने वाले की आलोचना करनी है, चाहे वो स्त्री हो या पुरुष, हिन्दू हो या मुसलमान। आज ये ज़रूरी है कि हम परखें कौन से साधू, इमाम, पादरी, ग्रन्थी वाकई धार्मिक हैं और कौन से सत्ता की लड़ाई में लगे हुए हैं। आज जो लोग धर्म के नाम पर नफ़रत, अराजकता फैला रहे हैं, हथियारों के ज़ोर पर अपनी बातें मनवाना चाह रहे हैं, जो क़ानून और भारत के संविधान को नहीं मान रहे वो आतंकवादी हैं और देशद्रोही हैं।

'सबला' के इस अंक में हम इसी विषय पर कई कविताएं छाप रहे हैं। इन सभी के द्वारा हम ये कहना चाह रहे हैं कि हम गहराई से विचार करें, संयम रखें और जो सच्चे धार्मिक मूल्य और गुण हैं उन्हीं का पालन करें। □